

INHALT

| | |
|---|-----|
| Einleitung von Cornelia Lüdecke | 7 |
| Vorwort zur 12. Auflage | 28 |
| »Om mani padme hum« | 29 |
| 1. Von Moskau bis Chorgos | 31 |
| 2. Nach Kuldscha | 40 |
| 3. Zum Sairam-nor. Mein wissenschaftliches Programm | 46 |
| 4. Tihwa (Urumtschi), der Hauptstadt Sinkiangs entgegen | 54 |
| 5. Der Kampf um den Reisepass | 66 |
| 6. Zwischen feindlichen Brüdern | 79 |
| 7. Lussar. Tage der Krankheit und Not | 92 |
| 8. Unprogrammgemäßer Abstecher nach Lantschou | 103 |
| 9. Und dennoch ... westwärts. Marsch durch Kriegsgebiet | 109 |
| 10. Tankar. Junri-gomba. | 122 |
| 11. Zum Kuku-nor. Bei den Dogpas | 133 |
| 12. Von Pass zu Pass | 147 |
| 13. Verlust der Karawane. Nach Dsundja | 161 |
| 14. In und um Dsundja | 175 |
| 15. Durch das Räubergebiet | 187 |
| 16. Zum Dri-tschü | 199 |
| 17. Tibetische Vorposten. Über den Dang-la | 217 |
| 18. Das Verhör | 230 |
| 19. Nach Nga-tschu-ka befohlen | 245 |
| 20. Botschaft vom Dalai-Lama | 256 |
| 21. Aufregende Verhandlungen | 266 |
| 22. Nga-tschu-ka | 274 |
| 23. Der Freiheit entgegen | 287 |
| 24. Westmarsch. Im Schnee versunken | 297 |
| 25. Harte Tage | 306 |
| 26. Nach Tschang-ling-körr | 314 |

| | | |
|-----|---|-----|
| 27. | Hinüber zum Selling-tso | 321 |
| 28. | Eine kritische Nacht. Schen-tsa-Dsong | 327 |
| 29. | Im Gebiet der großen Seen | 338 |
| 30. | Auf Sven Hedins Spuren | 344 |
| 31. | Auf neuen Wegen zum Teri-nam-tso | 351 |
| 32. | Nach Se-li-pu | 360 |
| 33. | Unter Räubern | 367 |
| 34. | Im Quellgebiet des Indus | 376 |
| 35. | In Eilmärschen nach Gartok | 383 |
| 36. | Bange Stunden. In Leh | 392 |
| 37. | Kaschmir. Srinagar. Am Ziel | 400 |
| 38. | Über den Himalaja heimwärts | 405 |
| | | |
| | Mein Dank | 413 |
| | Literaturverzeichnis | 415 |
| | Register | 419 |